Contents available at www.iamt.net.in

International Journal of Music Therapy
(ISSN 2249-8664)
Volume 2, Issue 1-2/2012, Pages 67-69

मध्यकालीन संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉ0 राजेश कुमार चतुर्वेदी,
अपर सचिव, उ0प्र0 राज्य उच्च शिक्षा परिषद,
लखनऊ

Article Information

Article history:
Received: 11.06.2012
Revised: 20.08.2012
Accepted: 16.09.2012

Keywords:
संगीत
मानसिक विकार

Abstract

मानव–जीवन सदैव ही संगीत से अनुप्राणित होता रहा है। मनुष्य अपने जीवन–काल में विविध प्रकार के उत्थान–पतन, हर्ष–विषाद एवं राग–द्वेष आदि द्वन्द्वात्मक भावों से ग्रसित रहता है। दैनिक जीवन की अनेक जटिल समस्यायें मनुष्य को आक्रान्त किये रहती हैं। आधुनिक औद्योगिक युग में जनसामान्य के मानसिक तनाव में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। संगीत मानसिक रूप से आंक्रान्त व्यस्त मनुष्य को विश्रान्ति प्रदान करता है, साथ ही उसकी समस्त चिन्ताओं एवं व्यथाओं के निराकरण हेतु सतत प्रयत्नशील भी रहता है।

© 2012 IAMT. All rights reserved.

''गीतम् वाद्यम् तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुख्यते।''

अर्थात्–गायन, वादन एवं नर्तन–इन तीनों के समुच्चय को संगीत कहते हैं। संगीत एक योग–साधना है। यह एक ऐसी निरन्तर प्रवाहमयी धारा है, जो मानव को नित्य–नव–प्रेरणा प्रदान करती रहती है। संगीत का आधार ध्वनि है। ध्वनि दो प्रकार की होती है–इनमें से प्रथम कोलाहल संगीत की दृष्टि से निष्प्रयोज्य है, तथा द्वितीय संगीतोपयोगी ध्वनि नाद है –

''गीतं नादात्मकं वाद्यं नादव्यकत्या प्रशस्यते।
तद्दवयानुगतं नृत्यं नादाधीमस्त्रयम्।।''

संगीत की सृजना नाद द्वारा होती है। नाद संगीत का आधार स्तम्भ है।

''आहतोऽनाद्वतश्चैव द्विधा नादो निगद्यते।
तत्रनाहतनादं तु मुनयः समुपासते।।
गुरूपदिछ्टमार्गेण मुक्तिद, नतु रंजकम्।
स नाद स्वाहतो लोके रंजको भवंजकः।।''

अनाहत नाद स्वयंभू होता है। यह बिना किसी आघात के उत्पन्न होता है। अतः इसमें रंजकता का अभाव होता है। संगीत की दृष्टि से यह निष्प्रयोज्य है। आहत नाद का प्रादुर्भाव आघात द्वारा होता है। इसमें नियमित, निरन्तर एवं सतत एक आन्दोलन रहता है। नियमित, निरन्तर एवं सतत आन्दोलन कर यह वैशिष्ट्य रंजकतादायक है। यह ध्वनि सुमधुर एवं कर्णप्रिय होती है। आहत नाद के द्वारा ही संगीत–सृजना होती है।

मानव–जीवन सदैव ही संगीत से अनुप्राणित होता रहा है। मनुष्य अपने जीवन–काल में विविध प्रकार के उत्थान–पतन, हर्ष–विषाद एवं राग–द्वेष आदि द्वन्द्वात्मक भावों से ग्रसित रहता है। दैनिक जीवन की अनेक जटिल समस्यायें मनुष्य को आक्रान्त किये रहती हैं। आधुनिक औद्योगिक युग में जनसामान्य के मानसिक तनाव में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। संगीत मानसिक रूप से आंक्रान्त व्यस्त मनुष्य को विश्रान्ति प्रदान करता है, साथ ही उसकी समस्त

चिन्ताओं एवं व्यथाओं के निराकरण हेतु सतत प्रयत्नशील भी रहता है।

संगीत आनन्दानुभूति का आविर्भाव है। आनन्द स्वर्गिक स्वरूप है। संगीत के माध्यम से ही दुःख के लेशमात्र से भी संबंध न रखने वाले अक्षय सुख की प्राप्ति होती है। संगीत द्वारा उद्भूत आनन्द अक्षुण्ण है। योग एवं ज्ञान के सर्वश्रेष्ठ आचार्य याज्ञवल्क्य एवं अन्य संगीताचार्यों का स्पष्ट कथन है कि संगीत का स्वरूप ईश्वरीय होने के परिणामस्वरूप ही जो मनुष्य संगीत का अभ्यास करते हैं, वे तप, दान, यज्ञ, कर्म एवं योग आदि के कष्टों से अस्पृश्य रहकर निर्विध्न मोक्ष–मार्ग का अनुगमन करते हैं।

भारतीय संगीत का इतिहास अत्यधिक प्राचीन है। प्राचीन भारतीय प्रबुद्ध ऋषियों, मुनियां एवं द्रष्टाओं ने सृष्टि की उत्पत्ति नाद ब्रह्म द्वारा मानी है। ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कणांश में, जड़–चेतन वस्तु में नाद व्याप्त है। अतैव नाद को नादब्रह्म की संज्ञा से अभिहित किया गया है। नाद ब्रह्म ओंकार–वाचक है। वैज्ञानिकों के मतानुसार नादरहित सृष्टि अकल्पनीय है। प्रकृति के प्रत्येक कण में प्रत्येक तत्व एवं प्रत्येक वस्तु में संगीत की अक्षण्ण और अखण्ड धारा सदियों से वर्तमान तक प्रतिक्षण समाहित एवं प्रवाहित हो रही है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही अदृश्यतः संगीतमय है।

सभ्यता के प्रत्येक चरण में संगीत की यह स्वर–लहरी किसी–न–किसी रूप में विद्यमान रही है। सृष्टि–सृजन के साथ ही संगीतकला का सूर्य उदित हो चुका था। अतः संगीत का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है, जितना कि मानव–मनोभावों का है। मनुष्य के अथक प्रयत्नों के परिणामस्वरूप संगीतकला विभिन्न युगों में उत्तरोत्तर विकसित होती गयी।

मध्यकाल में मुगल–सभ्यता से प्रभावित होकर भारतीय संगीत अपनी प्राचीनता को विस्मृत करते हुए एक नवीन रूप में विकसित होने लगा। परिणामतः भारतीय संगीत उत्तरी एवं दक्षिणी दो पद्धतियों में विभक्त हो गया। दक्षिण भारतीय संगीत अपने प्राचीन मौलिक रूप को अक्षुण्ण रखते हुए उन्नति–पथगामी होता रहा, जबकि उत्तर भारतीय संगीत मुस्लिम–संगीत के सम्पर्क में आकर नित–नवरूपों में विकसित होने लगा।

संगीत की विकासयात्रा मध्यकाल में भी निर्बाध गति से चलती रही। संगीत एवं संगीतज्ञों को राजाश्रय प्राप्त होने के कारण संगीत सामंतशाही बन गया और जनसामान्य से दूर होता चला गया। सामंतशाही ऐश्वर्य के प्रवेश के कारण संगीत अपनी मौलिक मर्यादा से च्युत होकर श्रृंगार–प्रधान हो गया।

मध्यकाल के पूर्वार्द्ध में प्रबन्ध–गायन प्रचलित था, इसी कारण से यह प्रबन्ध–काल भी कहलाता है। इस काल में 'संगीत–मकरंद', 'गीतगोविन्द' एवं 'मानसोल्लास' जैसे ग्रन्थों की रचना हुई। सन् 1290 से 1320 के बीच अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में महान् संगीतज्ञ शारंगदेव ने भारतीय संगीत के आधार पर्व अमर ग्रंथ 'संगीत–रत्नाकर' की रचना की ।

चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से नवीन राग–रागिनियों का जन्म हुआ। तत्पश्चात् बाबर के शासनकाल में ख्याल, गजल एवं कब्बाली आदि गायन–शौलियों का आरम्भ हुआ। संगीत में श्रृंगारिकता समाविष्ट होने के बाद भी शास्त्रीय संगीत उन्नतिगामी रहा। बाबर के समकालीन कल्लिनाथ पंडित ने 'संगीत–रत्नाकर' की एक विस्तृत टीका लिखी। रामामात्य कृत 'स्वरमेल–कलानिधि' भी इसी काल में लिखा गया। जौनपुर के बादशाह सुल्तान हुसैन शर्की ने ख्याल–गायन का प्रचार किया।

मुगल शहंशाह अकबर के शासनकाल में भारतीय संगीत अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। महान संगीताचार्य स्वामी हरिदास जी अकबर युग में ही हुए थे। यह समय संगीत का 'स्वर्णयुग' कहलाया। अबुल फजल कृत 'आइने अकबरी' के अनुसार– अकबर के दरबार में तानसेन, गायक बैजू, तालरंग एवं गोपाल आदि प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे।

तानसेन ने मियाँ मल्हार, मियाँ की तोड़ी, पर्व मियाँ की सारंग आदि रागों की रचना की, जो आज भी सुप्रसिद्ध राग हैं। इस काल में ध्रुपद–गायन का अत्यधिक प्रचार था। इसी समय सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ बैजू बावरा ने होरी गायन शैली

का तथा धमार ताल का आविष्कार किया। सन् 1599 ई. के लगभग अकबर के समय में ही कर्नाटकी संगीत के पण्डित पुण्डरीक विट्ठल ने 'सद्राग–चन्द्रोदय', 'रागमाला', 'रागमंजरी' एवं 'नर्तन–निर्णय' आदि प्रसिद्ध संगीत ग्रन्थों की रचना की।

अकबर के पुत्र जहाँगीर को नृत्य–गीतादि अत्यन्त प्रिय थे। दक्षिणी ग्रन्थकार सोमनाथ कृत 'राग–बिबोध' का रचनाकाल भी यही है। पं. दामोदर कृत 'संगीत–दर्पण' नामक ग्रन्थ की रचना भी जहाँगीर काल में ही हुई। जहाँगीर का पुत्र शाहजहाँ भी संगीत–प्रेमी था।

17वीं शताब्दी के मध्य से लेकर 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक के कुछ वर्षों में औरंगजेब शासक रहा, जो संगीत का एक कट्टर विरोधी था। इस कारण अकबर के बाद औरंगजेब के शासनकाल में संगीत का विकास अवरूद्ध रहा। औरंगजेब ने संगीत को निष्क्रियता उत्पन्न करने वाला एवं विलासिता का द्योतक माना। उसका संगीत के विषय में कहना था कि ''संगीत की कब्र इतनी गहरी खोदो कि भविष्य में कभी उसकी तनिक भी भनक भी सुनाई न पड़े।''

औरंगजेब द्वारा संगीत के कट्टर विरोध के बाद भी पण्डित अहोबम ने 'संगीत–पारिजात' नामक प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण संगीत–ग्रन्थ की रचना इसी काल में की।

मुगलकाल के अन्तिम बादशाह मुहम्मदशाह संगीले के समय में संगीत पुनः उन्नति की ओर अभिमुख हुआ। इसी समय पंजाब में गुलाम रसूल उर्फ शोरी मियाँ ने टप्पा जैसी लोचपूर्ण गायन–शैली का आविष्कार किया। त्रिवट, गजल एवं तराना जैसी शैलियाँ भी इसी काल में प्रचार में आयीं।

मध्यकालीन संगीत के इतिहास का विवेचन करने पर यह विदित होता है कि इस काल में संगीतकला की अत्यधिक उन्नति हुई, अनेक नये रागों एवं तालों की रचना हुई तथा तराना, गजल, टप्पा व ख्याल जैसी गायन–शैलियां प्रचार में आयीं।

संदर्भ–

1. पं. दामोदर पण्डित, संगीत–दर्पण, श्लोक 13, पृ. 81
2. भरतमुनि कृत ''नाट्यशास्त्र'', 4, 260–65
3. ओ. गोस्वामी, दि हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूजिक, पृ. 2
4. स्वामी प्रज्ञानन्द, हिस्ट्री ऑफ म्यूजिक, प्रथम सं.,पृ. 87
5. कीडिर्यल शोम्स, दि राइज ऐण्ड फाल ऑफ इण्डियन म्यूजिक
6. 'छायानट', अंक–22, जुलाई–सितम्बर 1982, पृ. 9
7. शाक्य संध्या रानी, रूहेलखण्ड की लोक सांस्कृतिक परम्परा